-6 AUG 2019

दैनिक राजस्थान पत्रिका, जयपुर

1850 के दशक में शुरू हुए थे 5 कला महाविद्यालय : एक पाकिस्तान और 4 भारत में हैं अभी

देश के 5 आर्ट स्कूलों में शामिल था, आज गिनती से बाहर

कला को मिले मान

जयपुर @ पत्रिका. लगभग 160 वर्ष पूर्व देश के टॉप-5 कला महाविद्यालयों में गिना जाने वाला राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट उर्फ मदरसा-ए-हुनरी आज अपना गौरव खोता जा रहा है। स्थिति यह है कि यह देश के टॉप आर्ट कॉलेजों से बाहर हो चुका है। हुनरमंद कलाकार देना तो दूर, यहां छात्र मूल काम करना भी नहीं सीख पा रहे हैं। जबकि इस आर्ट स्कूल के साथ शुरू हुए दूसरे आर्ट कॉलेज आज भी अपने बूते खड़े हैं। उन कॉलेजों में फैकल्टी भी योग्यताधारी है। कुछ जगह फैकल्टी की जगह खाली है लेकिन जो शिक्षक कार्यरत हैं, वे पूर्ण योग्यताधारी हैं।

यहां खोले गए थे कॉलेज : उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य यानी सन् 1850 के आसपास देश में 4 जगह मद्रास, कलकत्ता, बम्बई, लाहौर में 4 कला महाविद्यालय अंग्रेज सरकार ने शुरू किए थे। मद्रास में मद्रास कॉलेज ऑफ आर्ट (1850), कलकत्ता में कॉलेज ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट (1854) और बम्बई में जेजे स्कूल ऑफ आर्ट (1857) में शुरू किया गया। इन सभी कॉलेजों में इंग्लिश कलाकारों को निर्देशक बनाया गया। इसी दौरान महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय ने जयपुर में मदरसा-ए-हुनरी के रूप में आर्ट कॉलेज शुरू किया।

प्रदर्शन करते पूर्व व वर्तमान स्टूडेंट्स।

किस कॉलेज की क्या स्थिति

जेजे स्कूल ऑफ आर्ट मुम्बई : बीएफए, एमएफए, डिप्लोमा व होबी क्लास सहित 20 कोर्स संचालित। छह विभागों में 40-50 शिक्षक। इनमें अधिकतर विषय विशेषज्ञ। नियमित वर्कशॉप, सेमिनार आदि गतिविधियों का आयोजन।

राजकीय कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट चेन्नई : वर्ष 1850 में मद्रास (अब चेन्नई) में शुरू किए गए राजकीय फाइन आर्ट कॉलेज में यूजी में 6 व पीजी में 5 कोर्स संचालित हैं। इसकी तर्ज पर सरकार 2 और कला कॉलेज शुरू कर चुकी है।

राजकीय आर्ट एंड क्राफ्ट कॉलेज कलकत्ता : वर्ष 1853 में कलकत्ता में यह कॉलेज शुरू किया गया था। बीएफए, एमएफए के बाद 2005 में पीएडी डिग्री भी दी जाने लगी। इस संस्थान को नैक से 2007 में ए ग्रेड भी मिल गई थी।

राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट : वर्ष 1857 में मदरसा-ए-हुनरी नाम से आगाज। 1886 में नाम महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट हुआ। फिर पढ़ाने के साथ सिखाया भी जाता था। बाद में नाम राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स कर दिया गया।

यह कमी है

- **योग्य शिक्षकों का अभाव :** एमए डिग्रीधारी शिक्षक पढ़ा रहे जबकि बीएफए की डिग्री जरूरी।
- **वर्कशॉप-सेमिनार नहीं के बराबर :** प्रेक्टिकल अहम लेकिन वर्कशॉप-सेमिनार न के बराबर।
- **प्रोफेशनल आर्टिस्ट नहीं :** प्रोफेशनल व फ्रीलांस वर्क जरूरी मगर प्रोफेशनल आर्टिस्ट नहीं।
- **आधुनिक कोर्स की कमी :** सिर्फ ड्राइंग एंड पेंटिंग, एप्लाइड आर्ट व स्कल्पचर पढ़ाए जा रहे हैं, आधुनिक कोर्स नहीं।